

“किसी का ब्याह था”

(2:1-11)

रीति-रिवाज निश्चय ही समय और स्थान के हिसाब से अलग-अलग होते हैं, परन्तु उनमें से सबसे अधिक दबाव विवाह सम्बन्धी रीति-रिवाजों का है। किसी न किसी तरह, इनसे अच्छे-अच्छे लोग परेशानी में पड़ जाते हैं। यूहन्ना 2:1-11 का हमारा यह भाग, यीशु के एक विवाह में जाने के बारे में बताता है जहां, वह भी तनाव में आ गया था। इस घटना में यह देखकर कि उसने क्या किया, हमें पता चलता है कि वास्तव में मनुष्य का पुत्र कौन है (1:51)।

यीशु किसी की शादी में गया (2:1, 2)

यीशु की माता को एक विवाह का निमन्त्रण मिला था। यीशु और उसके चले मरियम के निमन्त्रण के आधार पर या उन्हें विशेष तौर पर बुलावे पर विवाह समारोह में गए। यह विवाह, गलील के काना नामक एक गांव में था। बाइबल के एक महान अनुवादक, जेरोम (345-420 ईस्वी) ने दावा किया है कि काना में जलने वाले दीये रात के समय नासरत से दिखाई देते थे, जो इस बात का संकेत है कि यह स्थान यीशु के बचपन के घर के निकट ही था।

पहली शताब्दी के यहूदियों की विवाह सम्बन्धी रीतियों के बारे में तो काफी कुछ पता चलता है, परन्तु उनके विवाहों में क्या-क्या होता था इसका विस्तार से पता नहीं चल पाया है। लगता है कि दूल्हे के घर में विवाह, दुल्हन के आने से बहुत पहले आरम्भ हो जाता था। दूल्हे के मित्र व परिवार के लोग इकट्ठे होकर घर में सैनक लगा देते थे और इकट्ठे होकर नगर में घूमते थे, कई बार तो घूमते-घूमते वे दुल्हन के घर तक चले जाते थे। वहां भी, विवाह समारोह हो रहा होता था। दुल्हन के घर जश्न के बाद, नवविवाहित और पूरी भीड़ मिलकर बारात के रूप में नगर की गलियों में जाती थी। इस बार, वे दूल्हे के घर पहुंचते थे, जहां लगभग एक सप्ताह तक जश्न चलता था। सम्भवतः ये सब बातें यूहन्ना 2 अध्याय के इस विवाह में भी थीं जिसमें यीशु भी गया था।

इस जश्न में यीशु का पूरा योगदान था। यह खुशी का समय था, अर्थात् खुशी और आनन्द का अवसर था। इस सत्य से यह सत्य न भूलें कि यीशु विवाह में शामिल होने के लिए गया था! क्या आप उसके वहां होने की कल्पना कर सकते हैं? क्या आप दूसरे अतिथियों से बातें करते हुए उसके मंद-मंद मुस्कुराने की कल्पना कर सकते हैं? संक्षेप में,

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यीशु खुशी भी मनाता था ? क्या आपके मन में बनी यीशु की तस्वीर में वह आनन्द का अनुभव करता मिलता है ? क्या विवाह के किसी जश्न में वह लोगों से घुल मिल जाता था ? निश्चय ही इस अध्याय में यीशु लोगों से घुल मिल गया ! उन्नीसवीं शताब्दी के एक अंग्रेज़ प्रचारक, सी. एच. स्पेर्जन ने ईश्वरीय आनन्द के विषय में कहा था:

चंचलता और ऊपरी नहीं, बल्कि मिलनसार, धन्य मन वाले आत्माएं जीतने वाले हर व्यक्ति की हंसी का मैं कायल हूँ। सिरके के बजाय शहद से अधिक मक्खियाँ पकड़ी जा सकती हैं, और नरक [Tartarus] वाले चेहरे के बजाय मुंह पर स्वर्ग के ओढ़ने वाला व्यक्ति अधिक आत्माओं को स्वर्ग की ओर ले जाता है।¹

विलियम बार्कले ने टिप्पणी की थी, “प्रसन्न होने को यीशु ने कभी अपराध नहीं माना। उसके अनुयायी प्रसन्न होने को अपराध क्यों मानें ?”²

मेरा मानना है, कि यूहन्ना चाहता था कि हम खिड़की से विवाह की दावत में झाँककर देखें कि यीशु कैसे खुश है। उसे बहुत काम करना था, संसार में बुराई व्याप्त थी, और मार्ग में क्रूस उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। ये सभी विचार यीशु को कठोर और उदास करते होंगे; परन्तु मनुष्य के पुत्र ने दावत का आनन्द लेने, मित्रों से मिलने, दूल्हा-दुल्हन को सम्मान देने और काना में होने वाली शादी की दावत के लिए समय निकाला। बिना आनन्द के यीशु का कोई भी विचार अधूरा है।

यीशु ने परिवार की सहायता की (2:3-5)

जश्न के बीच ही, “दाखरस घट गया” (2:3)। यीशु की माता मरियम को इस मुश्किल घड़ी को टालने की ज़िम्मेदारी का अहसास था, अतः उसने अपने बेटे को इस सम्बन्ध में कुछ करने के लिए कहा। उसने यह नहीं कहा कि वह यीशु से क्या करवाना चाहती है बल्कि उसने उसे केवल यही कहा कि, “उनके पास दाखरस नहीं रहा” (2:3)। इस पर यीशु का उत्तर था, “हे महिला मुझे तुझे से क्या काम ? अभी मेरा समय नहीं आया” (2:4)। इस वाक्य का मूल यूनानी अनुवाद है “मुझे और तुझे इससे क्या ?” यीशु के शब्दों का रूखापन हमें व्याकुल कर सकता है। वह इतना मनुष्य दिखाई देता है कि हमें सांत्वना नहीं दे सकता। मैं यह तो नहीं मानता कि वह अपनी मां के प्रति इतना अशिष्ट या क्रूर हो सकता है, परन्तु मुझे यह अवश्य लगता है कि यीशु मरियम के आग्रह पर अपनी निराशा व्यक्त कर रहा था कि वह ऐसी स्थिति में था जिससे उसका बड़ा उद्देश्य उलझ सकता था।

हमारे लिए यीशु को मानवीय परिवार से सम्बन्धित बातों में तनाव और क्रोध से पेश आते देखना बहुत ही बड़ी बात है। “देहधारी” होने का उसका एक भाग यह था कि वह एक पुत्र और भाई के रूप में रहा था। बाद में, अध्याय 7 में तो हम सगे भाई-बहनों की प्रतिद्वंद्विता को भी देखते हैं, क्योंकि यीशु के भाई उसके बढ़ते प्रभाव से ईर्ष्या और शत्रुता

रखते थे। अपनी मां के साथ समस्या का समाधान करते और अपने भाइयों के बुरे व्यवहार को सुनते यीशु को देखने पर हमें उसकी तस्वीर और भी स्पष्ट दिखाई देती है, जो इसके बिना नहीं मिल सकती थी।

यीशु तथा हमारे लिए परिवार का महत्व सबसे अधिक है। इसके साथ ही, परिवार से हमारे जीवन में उलझनें भी बढ़ जाती हैं। पारिवारिक सम्बन्धों में बड़े झमेले होते हैं, जिससे अक्सर हमारे सामने ऐसी परिस्थितियां बन जाती हैं जिनके ज़िम्मेदार हम नहीं होते। परिवार में रहकर ही, हमें सबसे बड़े आनन्द और कष्ट मिलते हैं। सम्बन्ध बड़े गहरे होते हैं व बड़ी तेज़ी से बदलते रहते हैं तथा उलझन से भरे रहते हैं। जीवन का आरम्भ हम अपने माता-पिता को ईश्वर के रूप में मानने से करते हैं जिन्हें सब कुछ ज्ञात होता है, फिर समय के साथ बड़े होने पर हमें आश्चर्य होता है कि उन्हें कुछ पता ही नहीं, एक समय ऐसा आता है जब हम पुनः उनकी समझ से प्रभावित होते हैं। हमारे जीवन का अधिकांश भाग पीढ़ियों के बीच इस आश्चर्य में रहता है कि बहस करते समय हमें अपने आप पर कितना काबू रखना चाहिए और दूसरों को अपने जीवन पर कितना नियन्त्रण देना चाहिए!

विवाह में, एक परिवार की उलझन भरी स्थिति में यीशु को अलग-अलग दिशाओं से खींचा जा रहा था। हम उसे एक ओर अपनी मां के लिए प्रेम और आदर व दूसरी ओर अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण से बीच फंसा देखते हैं। वह “अच्छा” और “बहुत अच्छा” दोनों में से एक को चुनने की विकट उलझन में था। उसके लिए अपनी माता की इच्छाओं और अपने पिता की मर्जी को पूरा करने में समानता बनाए रखना आवश्यक था। एक पति या माता-पिता के रूप में तो हमें यीशु को देखने का अवसर नहीं मिलता, परन्तु हम उसे एक वयस्क पुत्र के रूप में देखते हैं जो परिवार का एक भाग होने के कारण उस पर आने वाली हर स्थिति का हल करता है। हम सब जो परिवार में रहते हैं, उसके लिए धन्यवाद कर सकते हैं!

यीशु ने परमेश्वर की महिमा प्रकट की (2:6-11)

अपनी मां को यह बताने के बाद कि अद्भुत काम करने वाले के रूप में प्रसिद्ध होने का उसका समय अभी नहीं आया, यीशु ने विवाह में सेवकों की ओर मुड़कर उन्हें पास रखे पत्थर के छह मटके लाने के लिए कहा। उन्होंने वैसा ही किया जैसे कहा गया था और उन्हें ऊपर तक पानी से भर दिया। फिर उसने सेवकों से उसमें से कुछ पानी लेकर भोज के प्रधान के पास ले जाने के लिए कहा। उन्होंने उसकी आज्ञा मानकर फिर वैसा ही किया। जब भोज के प्रधान ने पानी चखा, तो उसने पाया कि वह तो दाखरस बन चुका था। वास्तव में यह विवाह की उस दावत का सबसे बढ़िया दाखरस बन गया था! उसने दूल्हे को बुलाकर इतना उत्तम दाखरस अन्त में देने का कारण पूछा।

यूहन्ना ने इस घटना को यह लिखकर समाप्त किया कि, “यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहिला चिह्न दिखाकर अपनी महिमा प्रकट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया” (2:11)। यूहन्ना के लिए, “चिह्न” एक महत्वपूर्ण शब्द था। अध्याय 2 से 12 तक सात बड़े चिह्नों के बारे में लिखा गया है। इस शब्द का इस्तेमाल यीशु द्वारा किए गए सामर्थ्य के

कामों, आश्चर्यकर्मों के लिए किया गया। परन्तु, चिह्न का अर्थ आश्चर्यकर्म से कहीं अधिक है अर्थात् यह एक ऐसा आश्चर्यकर्म है जो लोगों का ध्यान उस आश्चर्यकर्म के स्रोत अर्थात् परमेश्वर के अपने पुत्र यीशु में काम करने की ओर करता है। पानी को दाखरस में बदलने के इस चिह्न से, यीशु ने यह दिखाकर कि परमेश्वर सचमुच उसके साथ था “अपनी महिमा प्रकट की” (2:11)। एक चिह्न की गवाही को मानने का उपयुक्त ढंग वही होता है जो यीशु के चेलों का था: उन्होंने विश्वास किया। सुसमाचार की इस पुस्तक के लिए यूहन्ना ने अपना उद्देश्य लिखते हुए “चिह्न” और “विश्वास” दो मुख्य शब्दों को इस्तेमाल किया।

यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (20:30, 31)।

सारांश

इतनी दिलचस्प घटना निश्चय ही हमें विश्वास करने के लिए पुकारती है। चिह्न से पता चला कि यीशु वही था जो होने का उसने दावा किया था। इससे यह भी पता चलता है कि यीशु में वस्तुओं को बदलने की सामर्थ्य थी। इस कहानी में पानी दाखरस बन गया; बाद में, अंधेरे में खोए हुए लोग परमेश्वर की संतान की मशाल में बदल गए। परन्तु, याद रखें कि पवित्र शास्त्र की इस आयत को यूहन्ना रचित सुसमाचार के संदर्भ में ही रखा जाए। यह चिह्न पहला तो है, परन्तु सम्भवतः यीशु द्वारा दिखाए चिह्नों में से सबसे छोटा। बाद में, अधिक विश्वास करने के लिए हमें बड़े-बड़े चिह्न देखने को मिलेंगे। अभी, यही पूछना काफी है, “क्या तुमने चिह्न देखा है? तुम यीशु के विषय में क्या सोचते हो? क्या तुम विश्वास में बढ़ रहे हो? क्या तुम दृढ़ते, सुनते, देखते और पीछे चलते रहोगे?”

पाद टिप्पणियां

¹सी. एच. स्पर्जन, *लैक्चर्ज टू माई स्टूडेंट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: जॉर्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1970), 170. ²विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ जॉन*, vol. I, *द डेयली बाइबल स्टडी सीरीज़*, संशो. सं (फिलाडेल्फिया: वैस्ट मिनिस्टर प्रेस), 85.